सतलुज के आसपास होगा पुरातात्विक अध्ययन

जागरण विशेष

वी के शुक्ला • नई दिल्ली

हिमाचल के रामपुर से गुजरती सतलुज • सौ. इंटरनेट मीडिया

- सतलुज और सहायक नदियों के दोनों तरफ होगा अध्ययन
- अध्ययन में पता लगेगा, सतलुज ने कितनी बार बदलीं अपनी धाराएं

सतलुज नदी के सांस्कृतिक विरासत के संबंध में पुरातात्विक अध्ययन होगा। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) सतलुज और इसकी सहायक नदियों के दोनों तरफ पांच किलोमीटर तक करेगा अध्ययन होगा। इस अध्ययन की रिपोर्ट तैयार कर पुरातात्वित साक्ष्य रिकार्ड किए जाएंगे। इस नदी पर पहली बार इस तरह का अध्ययन हो रहा है। यह नदी हिमाचल में शिपकी (किन्नौर) में प्रवेश करती है और वहां से पंजाब के कई जिलों से होकर फिरोजपुर पहुंचती है। उसके बाद वहां से पाकिस्तान में प्रवेश कर जाती है। ऋग्वेद के नदीसूक्त में इस अत्यंत प्राचीन नदी को शतुद्रि (सौ शाखाओं वाली) कहा गया है।

क्या-क्या होगा अध्ययन: अध्ययन में एसआइ यह पता लगाएगा कि सतलुज नदी ने कितनी बार अपनी धाराएं बदली हैं। वैदिक काल में इस नदी को 100 शाखाओं वाला कहा गया है, यानी इससे 100 नदियां निकलती थीं। एएसआइ पुरातात्विक अध्ययन कर पता लगाएगा कि इन सहायक नदियों के पुरातात्विक साक्ष्य क्या हैं? इसकी जो सहायक नदियां अब मौजूद नहीं हैं, वह कहां से कहां तक बहती थीं? इन नदियों के समाप्त हो जाने के क्या कारण रहे? यह अध्ययन सतलुज की वर्तमान धारा के पांच किमी बाएं और पांच किमी दाएं में होगा। इसी तरह वर्तमान में बह रही सहायक नदियों की भी वर्तमान धारा के पांच किमी बाएं और पांच किमी दाएं में सतलुज से लेकर पांच किमी तक अध्ययन होगा।

अध्ययन के तहत एक जिले के बाद अगले जिले का अध्ययन शुरू होगा। अध्ययन किन्नौर के उस क्षेत्र से शुरू होगा, जहां से सतलुज भारत में प्रवेश करती है। यानी, हिमाचल के शिपकी (किन्नौर) से रामपुर (शिमला) कुल्लू, सोलन मंडी और बिलासपुर से होते हुए पंजाब के रूपनगर, नांगल, शहीद भगत सिंह जिला, लुधियाना, जालंधर, मोगा से फिरोजपुर तक इसका अध्ययन किया जाएगा। पुरातत्वविद् अक्षित कौशिश ने यह काम अपने हाथ में लिया है।

विष्णु पुराण में शतद्रु (सतलुज) को हिमवान पर्वत से निकली हुई नदी कहा गया है। सतलुज का स्रोत रावणह्रद नामक झील है। वर्तमान समय में सतलुज, 'बियास' (विपासा) में मिलती है। ब्यास नदी का पुराना नाम विपासा है, लेकिन दि मिहरान आफ सिंध एंड इट्रज ट्रिब्यूटेरीज के लेखक रेबर्टी का मत है कि सन् 1790 के पहले सतलुज, 'बियास' में नहीं मिलती थी। इस वर्ष ब्यास और सतलुज, दोनों के मार्ग बदल गए और वे निकट आने के बाद आपस में मिल गईं। ग्रीक ग्रंथों में इस नदी का उल्लेख बहुत कम आया है। कहा जाता है कि अलेक्जेंडर की सेनाएं ब्यास नदी से ही वापस चली गई थीं और उन्हें ब्यास के पूर्व की जानकारी बहुत थोड़ी हो सकी थी।

nwda.gov.in